प्राणियों के नामकरण का संकट टला

हर साल दुनिया भर के वैज्ञानिक हज़ारों नई प्राणी प्रजातियों की खोज करते हैं और इनका विवरण पेश करते हैं। विवरण में किसी भी नए प्राणी को एक नाम दिया जाता है। नामकरण को लेकर कई बारी वैज्ञानिकों के बीच विवाद भी होते हैं। इन विवादों का निपटारा करने के लिए वैज्ञानिकों ने मिलकर एक संस्था बनाई है - अंतर्राष्ट्रीय प्राणी-वैज्ञानिक नामकरण आयोग।

अंतर्राष्ट्रीय प्राणी नामकरण आयोग प्राणियों के नामकरण के मामलों में अंतिम निर्णायक है। यही आयोग प्राणी वैज्ञानिक नामकरण हेतु संहिता का भी निर्माण करता है और उसका अनुपालन सुनिश्चित करता है। देखा जाए तो जब लीनियस ने प्राणियों व वनस्पतियों के लिए द्विनाम पद्धति स्थापित की थी, उसके बाद करीब 100 सालों तक तो इस संदर्भ में कोई नियम-कायदे नहीं थे। अफरा-तफरी का माहौल ही रहा। फिर उक्त अंतर्राष्ट्रीय आयोग ने नामकरण संहिता तैयार की और इस काम में कुछ सलीका आया।

इस आयोग के कामकाज के लिए बहुत अधिक नहीं, फिर भी कुछ धन की ज़रूरत तो पड़ती ही है। अब तक एक परमार्थ ट्रस्ट 'इंटरनेशनल ट्रस्ट फॉर ज़ुऑलॉजिकल नॉमेनक्लेचर' इसकी वित्तीय व्यवस्था करता आया था। मगर अब वह ट्रस्ट लगभग दिवालिया हो चुका है और यह शंका पैदा हो गई थी कि नामकरण का काम एक बार फिर अस्त-व्यस्त हो जाएगा।

लेकिन फिलहाल तो सिंगापुर विश्वविद्यालय ने इसे जीवनदान दे दिया है। विश्वविद्यालय ने तय किया है कि वह आयोग को प्रति वर्ष 1 लाख सिंगापुर डॉलर की मदद देगा। वैसे पिछले कुछ वर्षों में आयोग को कुछ सख्त सवालों का सामना करना पड़ा है। कारण यह है कि हाल के वर्षों में जीव वर्गीकरण विज्ञान यानी टेक्सॉनॉमी की शक्ल पूरी तरह बदल गई है। जैसे आजकल काफी सारे शोध का प्रकाशन सिर्फ ऑनलाइन अर्थात वेब-आधारित शोध पत्रिकाओं में होता है। आयोग को ऐसे शोध पत्रों को मान्यता देनी पड़ी। इसके लिए संहिता में संशोधन करके यह प्रावधान जोड़ा गया कि मात्र ऑनलाइन प्रकाशनों में भी जीव प्रजातियों का नामकरण किया जा सकता है।

आजकल प्रति वर्ष जितनी प्रजातियां खोजी जाती हैं, उनकी संख्या 15,000 तक होती है। इतनी प्रजातियों के विवरणों पर विचार करना और उनके नामों के बारे में फैसले करना भी एक बड़ी चुनौती साबित हो रही है। सिंगापुर विश्वविद्यालय से अगले तीन वर्ष तक मिलने वाला अनुदान शायद आयोग को इस संकट से फिलहाल तो बचा लेगा मगर एक चुनौती यह भी है कि 2018 में नामकरण संहिता का नया संस्करण तैयार किया जाना है।

प्राणी विज्ञान में नामकरण का यह मसला बाहरी लोगों को शायद बेतुका लगे मगर इस क्षेत्र में कार्यरत लोगों के लिए यह बहुत महत्व रखता है क्योंकि विज्ञान में इस बात का काफी महत्व है कि बातचीत करते वक्त सब लोग एक शब्द या नाम का एक ही अर्थ समझें। ***(स्रोत फीचर्स)***